Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Vol. 9, Issue 2 | November 2021 - April 2022 | pp. 87-91

ऑपरेशन गंगा : वैश्विक पटल पर भारतीय सॉफ्ट पावर की बढ़ती भूमिका

Research Reinforcement
ISSN 2348-3857

रामचन्द्र डूडी

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, (राजस्थान)

शोध सारांश

24 फरवरी, 2022 को रूस द्वारा यूक्रेन पर सैन्य आक्रमण के कारण युद्धक्षेत्र में फंसे भारतीय नागरिकों को स्वदेश लाने के लिए भारत सरकार द्वारा 'ऑपरेशन गंगा' अभियान प्रारम्भ किया गया। भारतीय प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार की प्रभावी व निरन्तर मॉनिटरिंग में युद्ध प्रभावित यूक्रेन से लगभग 22500 भारतीय नागरिकों को सुरक्षित भारत वापस लाया गया। इस अभियान में भारत ने भारतीय नागरिकों के अलावा 'वसुधैव कुटुम्बकम' के सिद्धान्त के अनुरूप कई विदेशी नागरिकों यथा-पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, लेबनान आदि 18 देशों के कुल 147 नागरिकों को भी संघर्ष क्षेत्रों से सुरक्षित निकाल कर मदद की गई। भारत सरकार के 04 केन्द्रीय मंत्रियों सहित विदेश मन्त्रालय ने यूक्रेन में फंसे छात्रों की मदद के लिए अपने 50 से अधिक आला अधिकारी लगाये। ऐसे राहत अभियान पूर्व में भी भारत सरकार द्वारा संचालित किए गए हैं तथा इनके द्वारा विश्व में भारत की बढ़ती हुई शक्ति व साख का परिचय दिया गया है। 'ऑपरेशन गंगा' अभियान की अभूतपूर्व सफलता से भारत में पक्ष-विपक्ष द्वारा एकजुटता का परिचय दिया गया तथा अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा भी भारत सरकार की प्रशंसा की गई। यह अभियान वैश्विक पटल पर भारत के प्रभाव में वृद्धि, प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी की बढ़ती हुई छवि, जन-जन में सुरक्षा का विश्वास तथा भारतीय सॉफ्ट पावर के नवीन आयाम के रूप में साबित होगा।

संकेताक्षर— *ऑपरेशन, सॉफ्ट पावर, रूस-यूक्रेन संकट, वसुधैव कुटुम्बकम*

प्रस्तावना

दुनिया को जिसकी आशंका थी, वह सच साबित हुई और 24 फरवरी, 2022 को रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने यूक्रेन के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर आक्रमण कर दिया। दुनिया पहले भी कई युद्ध की विभीषिका झेल चुकी है और इस रूस-यूक्रेन युद्ध की तपिश पूरे विश्व में महसूस की जा रही है।

लगभग 20,000 भारतीय नागरिक यूक्रेन में रहते है तथा इनमें से 18,000 से अधिक तो भारतीय विद्यार्थी है, जो वहाँ मेडिकल की पढ़ाई कर रहे हैं। रूसी आक्रमण की आशंका व यूक्रेन में अस्थिरता और लगातार बढ़ रहे तनाव के मध्यनजर भारतीय नागरिकों के लिए भारत सरकार ने उन्हें शीघ्र यूक्रेन से निकलने की 15, 20 व 22 फरवरी, 2022 को एडवाइजरी जारी की थी।

24 फरवरी, 2022 को यूक्रेन पर रूसी आक्रमण के बाद यूक्रेन में रह रहे भारतीय नागरिकों व अध्यनरत भारतीय विद्यार्थियों को वहाँ से निकालना बड़ी चुनौती व सबसे बड़ी प्राथमिकता थी। रूसी आक्रमण के साथ ही यूक्रेन की राजधानी कीव व अन्य शहरों की हवाई सेवा बन्द होने से भारत ने यूक्रेन की सीमा से सटे पड़ोसी देशों रोमानिया, हंगरी, पौलेण्ड, माल्दोवा, स्लोवाकिया के जमीनी रास्तों से नागरिकों व विद्यार्थियों की निकासी के प्रयास प्रारम्भ कर दिए।

यूक्रेन में फंसे भारतीय नागरिकों के चिन्ताजनक हालात के मध्यनजर भारत सरकार ने 26 फरवरी, 2022 को भारतीय

नागरिकों की सुरक्षित वापसी के लिए 'ऑपरेशन गंगा' अभियान प्रारम्भ किया और भारत के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने यूक्रेन के राष्ट्रपति व्लादिमीर जेलेंस्की से दूरभाष पर वार्ता की।

ऑपरेशन गंगा के तहत भारत के प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में 28 फरवरी, 2022 को उच्च स्तरीय बैठक में भारत सरकार के 04 केन्द्रीय मंत्रियों को युक्रेन के पड़ोसी देशों यथा-हरदीप सिंह पुरी को हंगरी, ज्योतिरादित्य सिंधिया को रोमानिया और माल्दोवा, जनरल वी.के. सिंह को पौलेण्ड व कीरेन रिजीजू को स्लोवाकिया में निकासी मिशन के समन्वय और छात्रों की मदद के लिए विशेष दूत के तौर पर भेजने का निर्णय लिया गया।

ऑपरेशन गंगा अभियान के तहत पहली उड़ान 26 फरवरी, 2022 को रोमानिया के बुखारेस्ट से विद्यार्थियों को लेकर मुम्बई व 27 फरवरी को नई दिल्ली पहुँची। इस अभियान में निजी हवाई सेवा-एयर इंडिया, इंडिगो, एयर इंडिया एक्सप्रेस, एयर एशिया इंडिया, गो फर्स्ट व स्पाइस जेट ने सहयोग किया तथा भारतीय वायुसेना द्वारा सी-17 ग्लोब मास्टर विमान उपलब्ध करवाया गया।[1]

अभियान ऐसे समय में किया गया था, जब सैन्य कार्यवाई, हवाई हमले और गोलीबारी चल रही थी। अभियान उस बड़े देश में चला जो युद्धग्रस्त था। प्रधानमन्त्री ने कई मौकों पर रूस और यूक्रेन के राष्ट्रपतियों से बात की। उन्होंने विशेष रूप से खारकीव और सूमी से भारतीयों की सुरक्षित निकासी का मुद्दा उठाया। प्रधानमन्त्री ने रोमानिया, स्लोवाक गणराज्य, हंगरी और पौलेंड के राष्ट्रपतियों से अपने देशों में भारतीयों के प्रवेश की सुविधा को लेकर बात की।

सूमी से भारतीयों को निकालना बेहद जटिल था, क्योंकि छात्रों की गोलीबारी में फंसने की सम्भावना थी। शहर से उनकी निकासी के लिए एक विश्वसनीय युद्धविराम की जरूरत थी। यह आखिर यूक्रेन और रूस के राष्ट्रपतियों के साथ खुद प्रधानमन्त्री के व्यक्तिगत हस्तक्षेप के कारण हुआ। यूक्रेन संघर्ष के दौरान मारे गए भारतीय छात्र नवीन शेखरप्पा की असमय मौत पर उनके पार्थिव शरीर को भारत लाने के लिए सरकार प्रयास कर रही है। साथ ही एक नागरिक हरजोत सिंह को गोली लगने से घायल होने पर उसके उपचार का पूरा ध्यान रखा जा रहा है तथा उन्हें भारतीय वायुसेना की मदद से भारत लाया गया है।[2] पौलेंड के राजदूत एडम बुराकोवस्की ने यूक्रेन में फंसे भारतीयों को सुरक्षित स्वदेश पहुँचने पर सुखद अहसास बताया। पौलेंड सरकार और दिल्ली स्थित पौलेंड दूतावास ने सभी भारतीयों को स्वदेश लौटने में अहम भूमिका निभाते हुए यूक्रेन से भागे भारतीय छात्रों को पौलेंड में बिना वीजा अपने देश में दाखिल होने की इजाजत दी थी।[3]

हंगरी की सरकार व वहाँ के लोगों ने भारतीय नागरिकों की काफी मदद की। वहाँ की सरकार ने बार्डर पर बिना वीजा के आने दिया। पासपोर्ट एक्सपायर्ड होने व कोविड प्रमाण पत्र के बिना भी छात्रों को प्रवेश दिया।[4]

इस अभियान का सम्पूर्ण खर्चा भारत सरकार द्वारा वहन किया गया है। चूंकि यूक्रेन का एयरस्पेस बन्द था, इसलिए पड़ौसी देश पौलेंड, रोमानिया, हंगरी और स्लोवाकिया से फ्लाइट्स के द्वारा स्वदेश वापसी की गई। युद्धग्रस्त यूक्रेन से छात्रों को निकालने के लिए बसों की व्यवस्था की गई। रूस के द्वारा विदेशी नागरिकों को युद्धग्रस्त क्षेत्र से निकासी के लिए 130 बसों की व्यवस्था की गई थी। भारतीय छात्रों के लिए अस्थायी रूप से ठहरने व विश्राम के लिए चौकियों पर जगह बनाई गई तथा दवाओं के भण्डार के साथ मोबाइल क्लीनिक भी स्थापित कर मदद प्रदान की गई। नई दिल्ली में विवेकानन्द इंटरनेशनल फाउंडेशन द्वारा रूस-यूक्रेन संकट सामरिक रूझान और प्रभाव विषय पर आयोजित कार्यक्रम में रूस में पूर्व भारतीय राजदूत डी. बाला वेंकटेश वर्मा ने ऑपरेशन गंगा अभियान के तहत यूक्रेन से भारतीय नागरिकों को निकालने का भारत का एक अनूठा अभियान बताया तथा इस ऑपरेशन की सफलता के लिए भारतीय प्रधानमन्त्री व रूसी राष्ट्रपति के बीच व्यक्तिगत समझ की भूमिका को महत्त्वपूर्ण माना।[5]

अभियान के दौरान खारकीव और सूमी में आस-पास लड़ाई चल रही थी। सूमी से जब भारतीय छात्र सड़क मार्ग से सीमा की ओर लाए जा रहे थे, तब सड़क की दूसरी ओर हथियारों से लैस रूसी सैनिक टैंकों के साथ निकल रहे थे। चारों तरफ से बमबारी हो रही थी तथा भारतीय मिशन और इसकी टीम के सामने खतरनाक स्थिति थी। इससे पहले गोलीबारी में एक भारतीय छात्र की मौत ने और खौफ पैदा कर दिया था। रूस की तरफ से मिसाइल और हवाई हमले

हो रहे थे, लेकिन भारतीय अधिकारियों ने हमलों के बीच से भारतीय छात्रों को सुरक्षित निकालने में बड़ी बहादुरी दिखाई। विदेश मन्त्रालय ने यूक्रेन में फंसे छात्रों की मदद के लिए अपने 50 से अधिक आला अधिकारी लगाये, जिन्हें रूसी भाषा का ज्ञान था। यूक्रेन व रूस की भौगौलिक जानकारी रखने वाले अधिकारियों की ऐसी पाँच टीम बनाई गई, जो पौलेंड, रोमानिया, स्लोवाकिया, मालदोवा व हंगरी की सीमाओं तक भारतीयों को लाने के लिए मदद कर रही थी तथा भारत में 24 घण्टे सक्रिय रहने वाला एक 'वार रूम' बनाया गया।[6]

भारत सरकार द्वारा 02 मार्च, 2022 को केरला उच्च न्यायालय में दिए हलफनामे के अनुसार रूसी आक्रमण के समय लगभग 20,000 भारतीय नागरिक यूक्रेन में फंसे हुए थे।[7] भारतीय नागरिकों व विद्यार्थियों को यूक्रेन से वापस निकालने के लिए भारत सरकार द्वारा लगातार प्रयास किए गए तथा इस दौरान भारतीय प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी द्वारा रूस व यूक्रेन के राष्ट्रपति से कई बार दूरभाष पर वार्ता की गई। भारतीय विदेश मन्त्रालय द्वारा इस संकट में सहायता उपलब्ध कराने के लिए सम्पर्क के बहुआयामी चैनल यथा-क्लॉक हेल्पलाइन, ई-मेल, वेबसाइट, फैक्स, फोन नम्बर, ट्विटर हैण्डल स्थापित किए गए।[8] विदेश मन्त्री एस. जयशंकर (15 मार्च, 2022) द्वारा राज्यसभा में दी जानकारी के अनुसार ऑपरेशन गंगा के तहत 90 उड़ानों (76 नागरिक व 14 आई.ए.एफ. उड़ान) के द्वारा युद्ध प्रभावित यूक्रेन से 22,500 से अधिक भारतीय नागरिकों की स्वदेश वापसी हो चुकी है।[9] 11 मार्च, 2022 को यूक्रेन के पूर्वोत्तर क्षेत्र सूमी में फंसे भारतीय छात्रों को पौलेण्ड से अन्तिम उड़ान की वापसी के साथ ही लगभग सभी भारतीयों की सुरक्षित निकासी सम्पन्न हो चुकी है। सूमी में फंसे भारतीयों की सुरक्षित निकासी के लिए प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने यूक्रेन व रूस के राष्ट्रपति से फोन पर वार्ता कर उनके लिए मानवीय गलियारा बनाया गया। भारतीय दूतावास द्वारा भारतीय छात्रों को यूक्रेन सीमा पार करने के लिए यात्रा के दौरान भारतीय राष्ट्रीय ध्वज 'तिरंगा' पहचान के लिए प्रयोग करने के निर्देश प्रदान किए, जिससे छात्रों को काफी सहायता प्राप्त हुई।

रूस-यूक्रेन युद्ध में अभी तक एक भारतीय छात्र की मौत हुई है तथा एक भारतीय छात्र घायल हुआ है। शेष सभी नागरिकों व विद्यार्थियों की सुरक्षित निकासी भारत सरकार की बहुत बड़ी उपलब्धि है। भारतीय विदेश मन्त्री एस.जयशंकर ने 11 मार्च, 2022 को ट्वीट कर ऑपरेशन गंगा के सफलतापूर्वक पूर्ण होने पर सभी सहयोगियों का आभार प्रकट किया।

ऑपरेशन गंगा के तहत भारतीय सरकार ने यूक्रेन में फंसे अन्य देशों के छात्रों की भी सहायता कर भारत का मान बढ़ाया है। इसके तहत 02 लेबनान, 03 सिरिया, 09 बंग्लादेशी, 01 पाकिस्तानी छात्रा, नेपाली व ट्यूनिशिया के छात्रों की यूक्रेन निकासी में मदद प्रदान की। रूस ने भारतीय छात्रों की सुरिक्षत यूक्रेन निकासी के लिए कुछ समय के लिए सीज फायर का ऐलान किया, जो कि भारत की बढ़ती हुई शक्ति का प्रतीक है।

यूक्रेन में फंसी पाकिस्तानी छात्रा असमा शफीक ने भारतीय सहायता के लिए भारत के ऑपरेशन गंगा अभियान की तारीफ की व भारतीय प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी व भारतीय दूतावास के अधिकारियों को धन्यवाद दिया। इससे पहले खबरें आई थी कि यूक्रेन में फंसे कई पाकिस्तानी छात्रों ने भारतीय तिरंगा लेकर अपनी जान बचाई थी। साथ ही पाकिस्तानी छात्रों ने भारतीय छात्रों को मुसीबत के समय निकालने के लिए भारत की तारीफ की थी। बांग्लादेश की प्रधानमन्त्री शेख हसीना ने 09 बांग्लादेशी नागरिकों को सुरक्षित यूक्रेन से निकालने के लिए भारतीय प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी का धन्यवाद प्रकट किया है।[10]

भारतीय प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने ऑपरेशन गंगा की सफलता का श्रेय वैश्विक पटल पर भारत के बढ़ते प्रभाव को दिया है। जब कई बड़े देश अपने नागरिकों को यूक्रेन से निकलवाने में मुश्किलों से जूझ रहे हैं, तब संकटग्रस्त विषम परिस्थितियों में युद्ध क्षेत्र से हजारों भारतीयों को सुरक्षित निकालने के लिए ऑपरेशन गंगा भारतीय विदेश नीति का नवीन आयाम साबित होगा।

भारतीय प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने 15 मार्च, 2022 को ऑपरेशन गंगा अभियान में शामिल हितधारकों के साथ वर्चुअल तौर पर मुलाकात की। इस मुलाकात में बातचीत के दौरान यूक्रेन, रोमानिया, हंगरी, पौलेण्ड, स्लोवाकिया में भारतीय समुदाय और निजी क्षेत्र के प्रतिनिधियों ने ऑपरेशन गंगा का हिस्सा बनने के अपने अनुभव और उनके सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में बताया और इस तरह के

एक जटिल मानवीय ऑपरेशन में अपने योगदान पर सन्तोष व सम्मान की भावना व्यक्त की।

प्रधानमन्त्री मोदी ने भारतीय समुदाय के नेताओं, स्वयंसेवी समूहों, कम्पनियों, व्यक्ति विशेष और सरकारी अधिकारियों की सराहना की। उन्होंने ऑपरेशन गंगा में शामिल सभी हितधारकों द्वारा प्रदर्शित देश भक्ति के उत्साह, सामुदायिक सेवा की भावना और टीम भावना की प्रशंसा करते हुए विभिन्न सामुदायिक संगठनों की सराहना कर उनकी नि:स्वार्थ सेवा को भारतीय सभ्यता के मूल्यों का उदाहरण बताया। विदेशों में भारतीयों की सुरक्षा का सरकार द्वारा दी जाने वाली उच्च प्राथमिकता को दोहराते हुए भारत ने हमेशा अन्तर्राष्ट्रीय संकट के दौरान अपने नागरिकों की सहायता के लिए तत्परता व 'वसुधैव कुटुम्बकम' के सदियों पुराने दर्शन से प्रेरित होकर आपात स्थितियों में अन्य देशों के नागरिकों को भी मानवीय सहायता प्रदान की है।[11]

प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार ने एक बार फिर यह साबित किया कि उनके लिए सत्ता से ज्यादा महत्त्वपूर्ण जनता का हित एवं इसकी रक्षा है। उन्होंने रूस-यूक्रेन एवं आपदा में फंसे अपने नागरिकों को सुरक्षित निकालने में कोई कसर नहीं छोड़ी। सबसे बड़ी राहत की खबर है कि यूक्रेन के घमासान वाले शहर सूमी में फंसे करीब सात सौ भारतीय छात्रों को सुरक्षित निकालने में उसे सफलता मिली है। इससे पूर्व लगभग 22 हजार भारतीयों को सुरक्षित स्वदेश लाया जा चुका है। ऑपरेशन गंगा के तहत चले इस अभियान में अभूतपूर्व सफलता मिली है और वह भी तब, जब कई देशों ने अपने नागरिकों को यूक्रेन से निकालने में हाथ खड़े कर दिये थे। यह भारत की विदेश नीति, मोदी की अन्तर्राष्ट्रीय छवि एवं भारत की लगातार बढ़ती साख एवं शक्ति का परिणाम है। इसलिए ऑपरेशन गंगा के उजालों पर इसकी प्रशंसा होनी चाहिए। प्रधानमन्त्री मोदी ने जनता को यूक्रेन में फंसे भारतीयों को सुरक्षित भारत लाने का केवल आश्वासन ही नहीं दिया बल्कि इसे पूरा करके दिखाया। उन्होंने देश की सुरक्षा एवं भारतीयों की रक्षा को प्राथमिकता देते हुए एक साहसी कर्मयोद्धा की भांति बड़ी सूझबूझ एवं जीवटता से इस ऑपरेशन गंगा को सफलतापूर्वक सम्पन्न किया।

जॉन एडम्स कहते है ''सार्वजनिक नीतिमत्ता, व्यक्तिगत नीतिमत्ता से अलग नहीं होती। सार्वजनिक नीतिमत्ता गणराज्य की आधारशिला है। शासनकर्ताओं में सार्वजनिक हित सम्बन्धों के विषय में सकारात्मक रूख होना चाहिए। इन बातों के साथ ही सम्मान, शक्ति, तेजस्विता भी लोगों के मन में पैदा की जानी चाहिए।'' प्रधानमन्त्री मोदी ने एक अरब तीस करोड़ की विशाल आबादी वाले देश के जन-जन में यह आस्था एवं विश्वास पैदा किया है।[12]

भारत सरकार द्वारा पहले भी संकट एवं आपदा के समय जनता की रक्षा के अनुठे कीर्तिमान स्थापित किए हैं। वर्ष 2015 में ऐसा ही कार्य यमन में 'ऑपरेशन राहत' के तहत किया था। तब तो उन्होंने बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका के अलावा अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, कनाड़ा समेत दो दर्जन देशों के नागरिकों को भी वहाँ से निकाला था। 'ऑपरेशन संकटमोचन' अभियान के द्वारा 2016 में दक्षिण सूडान से भारतीय नागरिकों की निकासी की गई। 'ऑपरेशन मैत्री' अभियान के द्वारा 2015 में नेपाल भूकंप के बाद भारत सरकार और भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा संयुक्त राहत और बचाव अभियान चलाया गया। 'ऑपरेशन समुद्र सेतु' व 'वंदे भारत मिशन' के द्वारा 2020 में कोविड-19 महामारी के दौरान विदेशों में फंसे भारतीयों को वापस लाने के लिए अभियान चलाया गया था। 'ऑपरेशन देवी शक्ति' के द्वारा 2021 में अफगानिस्तान से भारतीय नागरिकों दूतावास के कर्मचारियों की निकासी के लिए अभियान चलाया गया था।[13]

ऐसे अभियान न केवल भारत की बढ़ती क्षमता को रेखांकित करते हैं, बल्कि दुनिया को यह संदेश भी देते है कि भारत एक बड़ी व जिम्मेदार वैश्विक शक्ति बन रहा है। ऑपरेशन गंगा अभियान देश के साथ ही सम्पूर्ण विश्व और विशेषत: पड़ोसी देशों से भी तारीफ हासिल कर रहा है। ऑपरेशन गंगा से भारत ने एक बार फिर साबित किया है कि वह संकट की घड़ी में खुद के साथ ही मानवीय आधार पर दूसरे देशों की मदद करने से भी कभी गुरेज नहीं करता है।

विपक्षी साँसदों ने ऑपरेशन गंगा अभियान के तहत भारत सरकार के प्रयासों पर एकजुटता भी दर्शाई और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् में रूस के खिलाफ लाये गए निंदा प्रस्ताव पर मतदान से अनुपस्थित रहने पर भारत सरकार के फैसले

का समर्थन किया है। विदेश नीति के मामले में ऐसा पक्ष-विपक्ष में सहमति भी भारत में एक समृद्ध परम्परा रही है। विदेश मन्त्री एस. जयशंकर की अध्यक्षता में 03 मार्च, 2022 को एक सर्वदलीय बैठक के बाद विपक्षी नेता शशि थरूर ने विदेश मन्त्री को धन्यवाद देते हुए मोदी सरकार की विदेश नीति की तारीफ की तथा कहा कि राष्ट्रीय हितों के मामले पर भारत सर्वप्रथम की नीति के तहत पक्ष-विपक्ष की एकजुटता का संदेश दिया। ऑपरेशन गंगा के तहत सुचारु निकासी की निगरानी के लिए ना केवल केन्द्रीय मंत्रियों को विदेश भेजा गया, बल्कि वहाँ से आने वाले नागरिकों को दिल्ली व मुम्बई एयरपोर्ट आगमन पर स्वागत भी किया गया। विदेश मन्त्री एस. जयशंकर के राज्यसभा में (15 मार्च, 2022) में दी जानकारी अनुसार प्रधानमन्त्री मोदी ने कई मौकों पर रूस और यूक्रेन के राष्ट्रपतियों से बात की तथा इसके अलावा प्रधानमन्त्री ने रोमानिया, स्लोवाक गणराज्य, हंगरी और पौलेंड के राष्ट्रपतियों से अपने देशों में भारतीयों के प्रवेश की सुविधा को लेकर बात की। 'वसुधैव कुटुम्बकम' के भारत के सिद्धान्त के अनुरूप विदेशी नागरिकों को भी संघर्ष क्षेत्रों से निकाला गया। इनमें 18 देशों के 147 नागरिक शामिल थे।[14]

निष्कर्ष

'ऑपरेशन गंगा' अभियान के तहत भारतीय नागरिकों की सुरक्षित स्वदेश वापसी करवाने के लिए भारत सरकार की भारत में तथा इसके अतिरिक्त विदेशी नागरिकों की मदद के लिए अन्य देशों द्वारा भी भारत की प्रशंसा की जा रही है। इस आपदा में भारत सरकार के द्वारा त्वरित कार्यवाही वैश्विक पटल पर भारत के प्रभाव में वृद्धि हुई है तथा वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में भारत की निरंतर बढ़ती साख व सॉफ्ट पॉवर का नवीन आयाम सिद्ध होगा।

सन्दर्भ सूची

1. ऑपरेशन गंगा ईएन.एम.विकिपिडिया.ओआरजी
2. डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.ओपीआईइंडिया.कॉम 15 मार्च, 2022
3. डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.एबीपीलाइव.कॉम 08 मार्च, 2022
4. डीएनएइंडिया.कॉम 07 मार्च, 2022
5. न्यूजऑनएआईआर.गोव.इन 14 मार्च, 2022
6. लाईवहिंदुस्तान.कॉम 10 मार्च, 2022
7. न्यूजइंडियाएक्सप्रेस.कॉम 02 मार्च, 2022
8. ऑपरेशन गंगा ईएन.एम.विकिपिडिया.ओआरजी
9. डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.ओपीआईइंडिया.कॉम 15 मार्च, 2022
10. नवभारतटाईम्स.कॉम 09 मार्च, 2022
11. हिंदी.एशियानेटन्यूज.कॉम 15 मार्च, 2022
12. डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.प्रभासाक्षी.कॉम 10 मार्च, 2022
13. डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.क्रोनिकलइंडिया.इन
14. डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.ओपीआईइंडिया.कॉम 15 मार्च, 2022